

अलङ्कार

लोक में जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाने में सहायक होते हैं उसी प्रकार काव्य में उपमादि अलंकार उसकी चारुता की अभिवृद्धि करते हैं। वस्तुतः काव्य के शोभाधायक तत्व को ही अलंकार कहते हैं।

शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशयिनः।

रसादीनुपकुर्वन्तोऽलङ्कारास्तेऽङ्गदादिवत्॥

शब्द तथा अर्थ को काव्य का शरीर कहा गया है। अतः काव्य-शरीर का अलंकरण भी शब्द तथा अर्थ दोनों रूपों में होता है। जो अलंकार शब्दों के द्वारा काव्य में चारुता की अभिवृद्धि करते हैं वे शब्दालंकार कहे जाते हैं जैसे अनुप्रास, यमक आदि। जो अलंकार अर्थ के द्वारा काव्य की चारुता की अभिवृद्धि करते हैं वे अर्थालंकार कहे जाते हैं, जैसे उपमा, रूपक आदि। इन दोनों प्रकार के अलंकारों का प्रस्तुत संकलन के पाठों में प्रयोग हुआ है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

अनुप्रासः

वर्णसाम्यमनुप्रासः। (काव्यप्रकाशः)

समान वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास अलंकार कहा जाता है।

उदाहरण -

वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति ध्यायन्ति नृत्यान्ति समाश्वसन्ति।

नद्यो घना मत्तगजा वनान्ताः प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवंगाः॥

(रामायणम्)

इस श्लोक में आए हुए वहन्ति, वर्षन्ति, नदन्ति, भान्ति, ध्यायन्ति, नृत्यान्ति तथा समाश्वसन्ति इन शब्दों में अनेक वर्णों की समान आवृत्ति है जो श्लोक की चारुता की अभिवृद्धि में सहायक है। अतः यहाँ पर अनुप्रास अलंकार है।

यमकः

सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः।

क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते॥

(साहित्यदर्पणम्)

जब वर्ण समूह की उसी क्रम से पुनरावृत्ति की जाए किंतु आवृत्त वर्ण समुदाय या तो

भिन्नार्थक हो या अंशतः अथवा पूर्णतः निरर्थक हो तो यमक अलंकार कहलाता है। उदाहरण-

प्रकृत्या हिमकोशाढ्यो दूरसूर्यश्च साम्प्रतम्।

यथार्थनामा सुव्यक्तं हिमवान् हिमवान् गिरिः॥

इस श्लोक में हिमवान् शब्द की आवृत्ति हुई है और दोनों पद भिन्नार्थक हैं। अतः यहाँ पर प्रयुक्त अलंकार यमक है जो श्लोक के सौंदर्य की अभिवृद्धि में सहायक है।

उपमा:

साधर्म्यमुपमा भेदे। (काव्यप्रकाशः, 10, 87)

दो वस्तुओं में, भेद रहने पर भी, जब उनका (समानता) प्रतिपादित किया जाता है तो वहाँ उपमा अलंकार होता है। उदाहरण-

रविसंक्रान्तसौभाग्यस्तुषारारुणमण्डलः।

निःश्वासान्ध इवादृशश्चन्द्रमा न प्रकाशते॥ (रामायणम्)

यहाँ पर सूर्य के प्रकाश से मलिन चन्द्रमा की उपमा निःश्वासों से मलिन आदर्श (दर्पण) से दी गई है। यह उपमा श्लोक के अर्थ की चारुता की वृद्धि में सहायक है।

उपमा में चार तत्त्व होते हैं

1. उपमेय - जिसकी समानता बताई जाए
2. उपमान - जिससे समानता बताई जाए
3. साधारण धर्म - उक्त दोनों में समान गुण
4. वाचक शब्द - समानता प्रकट करने वाले शब्द- इव यथा आदि।

रूपक:

तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः। (काव्यप्रकाशः, 10, 93)

अतिशय सादृश्य के कारण जहाँ उपमेय को उपमान का रूप दे दिया जाये अथवा उपमेय पर उपमान का आरोप कर दिया जाये वहाँ रूपक अलंकार होता है। उदाहरण-

अनलंकृतशरीरोऽपि चन्द्रमुख आनन्दयति मम हृदयम्।

सौवर्णशकटिका पाठ के इस वाक्य में प्रयुक्त चन्द्रमुख शब्द में रूपक अलंकार है। यहाँ पर मुख पर चन्द्रमा का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

उत्प्रेक्षा:

“भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना॥

(साहित्यदर्पणम्)

पर (उपमान) के द्वारा प्रकृत (उपमेय) की सम्भावना (उत्कट सन्देह) को उत्प्रेक्षा अलङ्कार कहते हैं।

उदाहरण-

पतितैः पतमानैश्च पादपस्थैश्च मारुतः।

कुसुमैः पश्य सौमित्रे! क्रीडन्निव समन्ततः॥ (रामायणम्)

यहां पर वायु के द्वारा पुष्पों के साथ की जाने वाली क्रीडा की सम्भावना में उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

अर्थान्तरन्यासः

भवेदर्थान्तरन्यासोऽनुषक्तार्थान्तराभिधा।

(चन्द्रालोकः, 5.66)

मुख्य अर्थ का समर्थन करने वाले अर्थान्तर (दूसरे वाक्यार्थ) का प्रतिपादन (न्यास) अर्थान्तरन्यास कहलाता है। उदाहरण-

यः स्वभावो हि यस्यास्ति स नित्यं दुरतिक्रमः।

श्वा यदि क्रियते राजा तत्किं नाश्नात्युपानहम्॥

यहाँ पर पूर्वार्द्ध के वाक्यार्थ का समर्थन उत्तरार्द्ध के वाक्यार्थ द्वारा किया गया है। अतः यहाँ अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

अतिशयोक्तिः

सिद्धत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते।

(साहित्यदर्पणम्, 10.46)

अध्यवसाय के सिद्ध उपमेय के लिए केवल उपमान का ही कथन होने पर अतिशयोक्ति अलङ्कार होता है। अध्यवसाय का तात्पर्य है- उपमेय के निगरण के साथ उपमान से अभेद का आरोप अर्थात् उपमेय तथा उपमान में अभेद की स्थापना ।

उदाहरण-

यूथेऽपयाते हस्तिग्रहणोद्यतेन केन कलभो गृहीतः।

यहाँ पर अर्जुन को हस्ती तथा अभिमन्यु को कलभ (हाथी का बच्चा) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार उपमेय अर्जुन व अभिमन्यु का निगरण कर उन्हें उपमान हस्ती तथा कलभ के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।